पर आवश्यक सिद्धान्त नहीं कि सेवा टहल करे सो प्रसिद्ध देखने और सुनने में आया है कि जो दास किसी का होता है जो वह अपने स्वामी की नियत सेवा टहल न करे तो नमकहरामों में गिनाजाता है और स्वामी भी प्रसन्न नहीं रहता है और जो शरण में आता है उसके ऊपर कोई सेवा टहल नियत नहीं परन्तु वह दासों की भांति दास्यता की टहल व सेवा भी करता है तो अनुक्षण सामने रहने के हेतु और सेवा का काम भी शीघ्र होजाता है। पद्धति दास्यनिष्ठा की जगह २ लिखी हैं और गोस्वामि तुलसीदासजी ने भी अयोध्याकाण्ड रामायण में दास्यनिष्ठा का भाव और रीति अच्छी कुछ वर्णन करी है उसका सारांश तात्पर्य यह है कि दोनों लोक का लोभ अर्थात् अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष को मन से दूर करके केवल अपने स्वामी की सेवा व प्रसन्नता को सब सिद्धान्तों पर सिद्धान्त-तर समझे और अपने आपको सब प्रकार परवश व आधीन अपने स्वामी के जानकर सुखपायके हर्षित और दुःख पायके दुःखित न होय और सुख को दिया हुआ अपने स्वामी का और दुःख को अपने जन्मान्तरीय पापों का फल समझता रहे और विशेष करके जगत् की बोलन यह है कि जो कोई बात दुःख व हानिकी आय जाती है तो यह कहते हैं कि भगवत् की इच्छा व आज्ञा ऐसीही थी सो जाने रहो कि अपने दास के दुःख व हानि के लिये भगवत् की आज्ञा कदापि नहीं होती। भगवत् हर घड़ी अपने दासों के वास्ते अच्छाही करता है नहीं तो विचार करना चाहिये कि उस मालिक की रिस और कोप करोड़ों ब्रह्माण्डों के ब्रह्मा और काल व यम इत्यादि नहीं सहसक्ते मनुष्य अपराधों से भरा क्या सहि सकेगा इसहेतु कदापि भूलिके व स्वप्नमें भी किसी दुःख व उत्पात के आने से किसी को यह मन में न हो कि भगवत् की इच्छा से हुआ। सेवा टहल जो दास को करना चाहिये अर्थात् आठवीं निष्ठा व सत्रहवीं निष्ठा में लिखी हैं उन सेवाओं का करना उचित व योग्य है सेवा मानसी होय अथवा साक्षात् श्रीविग्रह की तो जबतक सेवा सब न करे तबतक निष्ठा दास्यता की नहीं होसक्ती काहेसे कि दास का काम सेवा करने का है सैर व सपाटा करने फिरने का नहीं जब उस सेवा से छुट्टी पावे तब अपने स्वामी के सन्मुख विनय, प्रार्थना, स्तुति व अपराध क्षमापन किया करे और चरित्र व गुण शोचि समझके उस आनन्द में मग्न रहे उपासकों ने इस निष्ठा को पांचरस में एकरस लिखा है सो रस के विचार

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0284
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG